DAWAT-E-ISLAMI

रिसाला नं. : 133

Tazkirae Mujaddide Alfe Saani (Hindi)

तज़्किरए मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی

- सरहिन्द शरीफ़ के नव हुरूफ़ की निस्बत से 9 करामात 21
- इसे हाथी के पाउं तले कुचल्वा दिया जाए 21
- अपनी वफ़ात की पहले ही ख़बर दे दी 26
- ह़ाफ़िज़े क़ुरआन का अदब 30
- मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی के 11 अक़्वाल 38

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़् : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُستطرَف ج١ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاريخ دمشق لابن عساكر ج٥١ص١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **''तज़्किरए मुजद्दिदे अल्फ़े सानी** قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی''

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) हु़रूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हु़रूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये **''हु़रूफ़ की पहचान''** नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دَعْوت،اِستِعمال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हु़रूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = اے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 ´ E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

तज़्किरए मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर आप येह रिसाला (44 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का दिल सीने में झूम उठेगा ।

100 ह़ाजतें पूरी होंगी

सुल्त़ाने दो जहान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो मुझ पर **जुमुआ़** के दिन और रात **100** मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े **अल्लाह तआ़ला** उस की **100 ह़ाजतें** पूरी फ़रमाएगा, **70** आख़िरत की और **30** दुन्या की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो उस **दुरूदे पाक** को मेरी क़ब्र में यूं पहुंचाएगा जैसे तुम्हें तह़ाइफ़ (GIFTS) पेश किये जाते हैं, बिला शुबा मेरा इल्म मेरे विसाल (ज़ाहिरी वफ़ात) के बा'द वैसा ही होगा जैसा मेरी ह़यात (ज़ाहिरी ज़िन्दगी) में है ।" (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۷ ص۱۹۹ حدیث۲۲۳۵۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

विलादते बा सआ़दत

सिल्सिलए आ़लिय्या नक़्शबन्दिय्या के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी शैख़ अह़मद सरहिन्दी फ़ारूक़ी नक़्शबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की विलादते बा सआ़दत (BIRTH) हिन्द के मक़ाम "सरहिन्द"

www.dawateislami.net

में 971 सि.हि./1563 सि.ई. को हुई । (زُبْدَةُ الْمَقامات ص۱۲۷ماخوذاً) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नाम मुबारक : अह़मद, कुन्यत : अबुल ब-रकात और लक़ब : बदरुद्दीन है । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की औलाद में से हैं।

क़ल्ए़ की ता'मीर और पांचवें जद्दे अमजद की ब-र-कत (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی के पांचवें जद्दे अमजद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम रफ़ीउ़द्दीन फ़ारूक़ी सुह्रवर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ह़ज़रते सय्यिदुना मख़्दूम जहानियां जहां गश्त सय्यिद जलालुद्दीन बुख़ारी सुह्रवर्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात : 785 सि.हि.) के ख़लीफ़ा थे । जब येह दोनों ह़ज़रात हिन्द तशरीफ़ लाए और सरहिन्द शरीफ़ से ''मौज़अ़ सराइस'' पहुंचे तो वहां के लोगों ने दर-ख़्वास्त की, कि ''मौज़अ़ सराइस'' और ''सामाना'' का दरमियानी रास्ता ख़त़रनाक है, जंगल में फाड़ खाने वाले ख़ौफ़नाक जंगली जानवर हैं, आप (वक़्त के बादशाह) सुल्त़ान फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ को इन दोनों के दरमियान एक शह्र आबाद करने का फ़रमाएं ताकि लोगों को आसानी हो । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इमाम रफ़ीउ़द्दीन सुह्रवर्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बड़े भाई ख़्वाजा **फ़त्ह़ुल्लाह** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सुल्त़ान फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ के हुक्म पर एक क़ल्ए़ की ता'मीर शुरूअ़ की, लेकिन अ़जीब ह़ादिसा पेश आया कि एक दिन में जितना क़ल्आ़ ता'मीर किया जाता दूसरे दिन वोह सब टूट फूट कर गिर जाता, ह़ज़रते सय्यिदुना मख़्दूम सय्यिद जलालुद्दीन

बुख़ारी सुह्रवर्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को जब इस ह़ादिसे का इ़ल्म हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते इमाम रफ़ीउ़द्दीन सुह्रवर्दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی को लिखा कि आप ख़ुद जा कर क़ल्ए़ की बुन्याद रखिये और इसी शह्र में सुकूनत (या'नी मुस्तक़िल क़ियाम) फ़रमाइये, चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तशरीफ़ लाए क़ल्आ़ ता'मीर फ़रमाया और फिर यहीं सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई। ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی की विलादते बा सआ़दत इसी शह्र में हुई । **(زُبْدَةُ الْمَقامات ص۸۹مُلَخَّصًا)**

वालिदे माजिद का मक़ाम

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल अह़द फ़ारूक़ी चिश्ती क़ादिरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی जय्यिद आ़लिमे दीन और वलिय्ये कामिल थे । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अय्यामे जवानी में इक्तिसाबे फ़ैज़ के लिये ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ुद्दूस चिश्ती साबिरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 944 सि.हि./ 1537 सि.ई.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए आस्तानए आ़ली पर क़ियाम का इरादा किया लेकिन ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ुद्दूस चिश्ती عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : ''उ़लूमे दीनिया की तक्मील के बा'द आना ।'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब तह़सीले इ़ल्म के बा'द ह़ाज़िर हुए तो ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ुद्दूस चिश्ती عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی विसाल फ़रमा चुके थे और उन के शहज़ादे शैख़ रुक्नुद्दीन चिश्ती عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی (वफ़ात : 983 सि.हि./ 1575 सि.ई.) मस्नदे ख़िलाफ़त पर जल्वा अफ़्रोज़ थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल अह़द फ़ारूक़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को सिल्सिलए

www.dawateislami.net

क़ादिरिय्या और चिश्तिय्या में ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ फ़रमाया और फ़सीह़ो बलीग़ अ़-रबी में इजाज़त नामा मर्ह़मत फ़रमाया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه काफ़ी अ़र्सा सफ़र में रहे और बहुत से अस्ह़ाबे मा'रिफ़त से मुलाक़ातें कीं, बिल आख़िर सरहिन्द तशरीफ़ ले आए और आख़िर उ़म्र तक यहीं तशरीफ़ फ़रमा हो कर इस्लामी कुतुब का दर्स देते रहे। फ़िक़्ह व उसूल में बे नज़ीर थे, कुतुबे सूफ़ियाए किराम : **तअ़र्रुफ़, अ़वारिफ़ुल मआ़रिफ़** और **फ़ुसूसुल ह़िकम** का दर्स भी देते थे, बहुत से मशाइख़ ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इस्तिफ़ादा (या'नी फ़ाएदा ह़ासिल) किया। ''सिकन्दरे'' के क़रीब ''इटावे'' के एक नेक घराने में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का निकाह़ हुवा था। इमामे रब्बानी के वालिदे मोह़तरम शैख़ अ़ब्दुल अह़द फ़ारूक़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने 80 साल की उ़म्र में 1007 सि.हि./1598 सि.ई. में विसाल फ़रमाया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मज़ारे मुबारक सरहिन्द शरीफ़ में शह्र के मग़रिबी जानिब वाक़ेअ़ है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कई कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं जिन में **कुनूज़ुल ह़क़ाइक़** और **असरारुत्तशह्हुद** भी शामिल हैं। (सीरते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी, स. 77 ता 79 मुलख़्ख़सन) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

ता'लीमो तरबियत

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने अपने वालिदे माजिद शैख़ अ़ब्दुल अह़द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد से कई उ़लूम ह़ासिल किये। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को फ़राइज़ के साथ साथ नवाफ़िल की

www.dawateislami.net

मह़ब्बत भी अपने वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मिली थी, चुनान्चे फ़रमाते हैं : ''इस फ़क़ीर को इबादते नाफ़िला ख़ुसूसन नफ़्ल नमाज़ों की तौफ़ीक़ अपने वालिदे बुज़ुर्ग-वार से मिली है ।'' (مَبْدا ومَعاد ص٦) वालिदे माजिद के इलावा दूसरे असातिज़ा से भी इस्तिफ़ादा (या'नी फ़ाएदा ह़ासिल) किया म-सलन मौलाना कमाल कश्मीरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से बा'ज़ मुश्किल किताबें पढ़ीं, ह़ज़रत मौलाना शैख़ मुह़म्मद या'क़ूब सर्फ़ी कश्मीरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से कुतुबे ह़दीस पढ़ीं और सनद ली । ह़ज़रत क़ाज़ी बहलूल बदख़्शी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से क़सीदए बुर्दा शरीफ़ के साथ साथ तफ़्सीर व ह़दीस की कई किताबें पढ़ीं । ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने 17 साल की उ़म्र में उ़लूमे ज़ाहिरी से स-नदे फ़राग़त पाई । (حَضَراتُ القُدس، دفتر دُوُم ص٣٢)

जाहिल सूफ़ी शैत़ान का मस्ख़रा

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی का अन्दाज़े तदरीस निहायत दिल नशीन था । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तफ़्सीरे बैज़ावी, बुख़ारी शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, हिदाया और शर्ह़े मवाक़िफ़ वग़ैरा कुतुब की तदरीस फ़रमाते थे । अस्बाक़ पढ़ाने के साथ साथ ज़ाहिरी व बात़िनी इस्लाह़ के म-दनी फूलों से भी त़-लबा को नवाज़ते । इल्मे दीन के फ़वाइद और इस के ह़ुसूल का जज़्बा बेदार करने के लिये इल्म व उ़-लमा की अहम्मिय्यत बयान फ़रमाते । जब किसी त़ालिबे इल्म में कमी या सुस्ती मुला-ह़ज़ा फ़रमाते तो अह़सन (या'नी बहुत अच्छे) अन्दाज़ में

www.dawateislami.net

उस की इस्लाह़ फ़रमाते चुनान्चे ह़ज़रते बदरुद्दीन सरहिन्दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''मैं जवानी के आ़लम में अक्सर ग़-ल-बए ह़ाल की वज्ह से पढ़ने का ज़ौक़ न पाता तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कमाल मेह्रबानी से फ़रमाते : सबक़ लाओ और पढ़ो, क्यूं कि जाहिल सूफ़ी तो शैत़ान का मस्ख़रा है ।''

(اَیضاً ص۸۹ مُلَخَّصًا)

बेटा हो तो ऐसा !

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی तह़सीले इ़ल्म के बा'द आगरा (अल हिन्द) तशरीफ़ लाए और दर्सो तदरीस का सिल्सिला शुरूअ़ फ़रमाया, अपने वक़्त के बड़े बड़े फ़ाज़िल (उ़-लमाए किराम) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर इ़ल्मो ह़िक्मत के चश्मे से सैराब होने लगे । जब ''आगरा'' में काफ़ी अ़र्सा गुज़र गया तो वालिदे माजिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد को आप की याद सताने लगी और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को देखने के लिये बेचैन हो गए, चुनान्चे वालिदे मोह़तरम त़वील सफ़र फ़रमा कर आगरा तशरीफ़ लाए और अपने लख़्ते जिगर (या'नी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी) की ज़ियारत से अपनी आंखें ठन्डी कीं । आगरा के एक आ़लिम साह़िब ने जब उन से इस अचानक तशरीफ़ आ-वरी का सबब पूछा तो इर्शाद फ़रमाया : शैख़ अह़मद (सरहिन्दी) की मुलाक़ात के शौक़ में यहां आ गया, चूंकि बा'ज़ मजबूरियों की वज्ह से इन का मेरे पास आना मुश्किल था इस लिये मैं आ गया हूं ।

(زُبْدَةُ الْمَقامات ص۱۳۳ مُلَخَّصًا)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

बाप देखे औलाद सवाब कमाए

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़रमां बरदार और नेक औलाद आंखों की ठन्डक और दिल का चैन होती है । जिस त़रह़ वालिदैन की मह़ब्बत भरी नज़र के साथ ज़ियारत से औलाद को एक मक़्बूल ह़ज का सवाब मिलता है इसी त़रह़ जिस औलाद की ज़ियारत से वालिदैन की आंखें ठन्डी हों, ऐसी औलाद के लिये भी ग़ुलाम आज़ाद करने के सवाब की बिशारत है चुनान्चे **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "जब बाप अपने बेटे को एक नज़र देखता है तो बेटे को एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है ।" बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : अगर्चे बाप तीन सो साठ (360) मर्तबा देखे ? इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बड़ा है ।" (مُعْجَم کبیر ج۱۱ ص۱۹۱ حدیث ۱۱۶۰۸) या'नी उसे सब कुछ कुदरत है, इस से पाक है कि उस को इस के देने से आ़जिज़ कहा जाए ।

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मुराद येह है कि जब अस्ल (बाप) अपनी फ़र्अ़ (बेटे) पर नज़र डाले और उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी करते देखे तो बेटे को एक ग़ुलाम आज़ाद करने की मिस्ल सवाब मिलता है । इस की एक वज्ह येह है कि बेटे ने अपने रब तआ़ला को राज़ी भी किया और बाप की आंखों को ठन्डक भी पहुंचाई क्यूं कि बाप ने उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी में देखा है । (اَلتّیسیر ج۱ ص۱۳۱)

मुजद्दिदे अल्फ़े सानी का हुल्या मुबारक

आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रंगत गन्दुमी माइल ब सफ़ेदी थी, पेशानी

www.dawateislami.net

कुशादा और चेह्रए मुबारक ख़ूब ही नूरानी था । अब्रू दराज़, सियाह और बारीक थे । आंखें कुशादा और बड़ी जब कि बीनी (या'नी नाक) बारीक और बुलन्द थी । लब (या'नी होंट) सुर्ख़ और बारीक, दांत मोती की त़रह़ एक दूसरे से मिले हुए और चमकदार थे । रीश (या'नी दाढ़ी) मुबारक ख़ूब घनी, दराज़ और मुरब्बअ़ (या'नी चौकोर) थी । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दराज़ क़द और नाज़ुक जिस्म थे । आप के जिस्म पर मख्खी नहीं बैठती थी । पाउं की एड़ियां साफ़ और चमकदार थीं । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ऐसे नफ़ीस (या'नी साफ़ सुथरे) थे कि पसीने से ना गवार बू नहीं आती थी ।
(حَضَراتُ القُدُس، دفتر دُوُم ص ۱۷۱ مُلَخَّصًا)

सुन्नते निकाह़

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی के वालिदे माजिद ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल अह़द फ़ारूक़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को आगरा (अल हिन्द) से अपने साथ सरहिन्द ले जा रहे थे, रास्ते में जब थानेसर पहुंचे तो वहां के रईस शैख़ सुल्त़ान की साह़िब ज़ादी से ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی का अ़क़्दे मस्नून (या'नी सुन्नते निकाह़) करवा दिया ।

मुजद्दिदे अल्फ़े सानी ह़-नफ़ी हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे रब्बानी, मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی सिराजुल अइम्मा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुक़ल्लिद होने के सबब ह़-नफ़ी थे । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم से बे इन्तिहा अ़क़ीदत व मह़ब्बत रखते थे । चुनान्चे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

शाने इमामे आ'ज़म ब ज़बाने मुजद्दिदे अल्फ़े सानी

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की शान बयान करते हुए फ़रमाते हैं : बुज़ुर्गों के बुज़ुर्ग तरीन इमाम, इमामे अजल, पेश्वाए अक्मल अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बुलन्दिये शान के मु-तअ़ल्लिक़ मैं क्या लिखूं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तमाम अइम्मए मुज्तहिदीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن में ख़्वाह वोह इमामे शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हों या इमामे मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه या फिर इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इन सब में सब से बड़े आलिम और सब से ज़ियादा वरअ़ व तक़्वा वाले थे। इमामे शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **اَلْفُقَهَاءُ كُلُّهُمْ عِيَالُ اَبِىْ حَنِيْفَة** या'नी तमाम फ़ु-क़हा इमाम अबू हनीफ़ा के अ़याल हैं। **(مَبْدا ومَعاد ص٤٩ مُلَخَّصًا)**

इजाज़त व ख़िलाफ़त

हज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى को मुख़्तलिफ़ सलासिले तरीक़त में इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल थी : ﴾1﴿ सिल्सिलए सुहरवर्दिय्या कुब्रविय्या में अपने उस्तादे मोहतरम हज़रते शैख़ या'कूब कश्मीरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल फ़रमाई ﴾2﴿ सिल्सिलए चिश्तिय्या और क़ादिरिय्या में अपने वालिदे माजिद हज़रते शैख़ अ़ब्दुल अहद चिश्ती क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल थी ﴾3﴿ सिल्सिलए क़ादिरिय्या में केथली (मज़ाफ़ाते सरहिन्द) के बुज़ुर्ग हज़रत शाह सिकन्दर क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इजाज़त व

www.dawateislami.net

ख़िलाफ़त हासिल थी ﴾4﴿ सिल्सिलए नक़्शबन्दिय्या में ह़ज़रते ख़्वाजा मुह़म्मद बाक़ी बिल्लाह नक़्शबन्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल फ़रमाई। (सीरते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी, स. 91) ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने तीन सिल्सिलों में इक्तिसाबे फ़ैज़ का यूं ज़िक्र फ़रमाया है : "मुझे कसीर वासित़ों के ज़रीए नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इरादत हासिल है। सिल्सिलए नक़्शबन्दिय्या में 21, सिल्सिलए क़ादिरिय्या में 25 और सिल्सिलए चिश्तिय्या में 27 वासित़ों से।" (مکتوباتِ امامِ ربّانی، دفتر سوم، حصّہ نہم، مکتوب ۸۷ ج ۲ ص ۲۶)

पीरो मुर्शिद का अ-दबो एह़तिराम (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रत ख़्वाजा मुह़म्मद बाक़ी बिल्लाह नक़्शबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का बेह़द अ-दबो एह़तिराम फ़रमाया करते थे और ह़ज़रत ख़्वाजा मुह़म्मद बाक़ी बिल्लाह नक़्शबन्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी आप को बड़ी क़द्रो मन्ज़िलत की निगाह से देखते थे। चुनान्चे एक रोज़ ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی हुजरे शरीफ़ में तख़्त पर आराम फ़रमा रहे थे कि ह़ज़रत ख़्वाजा मुह़म्मद बाक़ी बिल्लाह नक़्शबन्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दूसरे दरवेशों की त़रह़ तने तन्हा तशरीफ़ लाए। जब आप हुजरे के दरवाज़े पर पहुंचे तो ख़ादिम ने ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی को बेदार करना चाहा मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सख़्ती से मन्अ़ फ़रमा दिया और कमरे के बाहर ही आप के जागने का इन्तिज़ार करने लगे। थोड़ी ही देर बा'द ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی की आंख खुली बाहर आहट

www.dawateislami.net

सुन कर आवाज़ दी कौन है ? ह़ज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : फ़क़ीर, मुह़म्मद बाक़ी। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आवाज़ सुनते ही तख़्त से मुज़्त़रिबाना (या'नी बे क़रारी के आ़लम में) उठ खड़े हुए और बाहर आ कर निहायत इज़्ज़ो इन्किसारी के साथ पीर साह़िब के सामने बा अदब बैठ गए। **(زُبْدَةُ الْمَقامات ص۱۰۳ مُلَخَّصاً)**

मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی मर्कज़ुल औलिया लाहोर में थे कि 25 जुमादल आख़िरा 1012 सि.हि. को आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुह़म्मद बाक़ी बिल्लाह नक़्शबन्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का देहली में विसाल हो गया। येह ख़बर पहुंचते ही आप फ़ौरन देहली रवाना हो गए। देहली पहुंच कर मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत की, फ़ातिह़ा ख़्वानी और अहले ख़ाना की ता'ज़ियत से फ़ारिग़ हो कर सरहिन्द तशरीफ़ लाए। **(ایضاً ص۳۲،۱۵۹ مُلَخَّصاً)**

नेकी की दा'वत का आग़ाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने यूं तो क़ियामे आगरा के ज़माने ही से नेकी की दा'वत का आग़ाज़ कर दिया था, लेकिन 1008 सि.हि. में ह़ज़रत ख़्वाजा मुह़म्मद बाक़ी बिल्लाह नक़्शबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से बैअ़त के बा'द बा क़ाइदा काम शुरूअ़ फ़रमाया। अ़हदे अक्बरी के आख़िरी सालों में मर्कज़ुल औलिया लाहोर और सरहिन्द शरीफ़ में रह कर ख़ामोशी और दूर अन्देशी के साथ अपने काम में मसरूफ़ रहे उस वक़्त अ़लानिया कोशिश करना मौत को दा'वत

देने के मु-तरादिफ़ था। जाबिराना और क़ाहिराना हुकूमत के होते हुए ख़ामोशी से काम करना भी ख़त्रे से ख़ाली न था लेकिन ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने येह ख़त्रा मोल ले कर अपनी कोशिशें जारी रखीं और हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मक्की ज़िन्दगी के इब्तिदाई दौर को पेशे नज़र रखा। जब दौरे जहांगीरी शुरूअ़ हुवा तो म-दनी ज़िन्दगी को पेशे नज़र रखते हुए बर्मला कोशिश का आग़ाज़ फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने नेकी की दा'वत और लोगों की इस्लाह़ के लिये मुख़्तलिफ़ ज़राएअ़ इस्ति'माल फ़रमाए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सुन्नते न-बवी की पैरवी में अपने मुरीदों, ख़ु-लफ़ा और मक्तूबात के ज़रीए इस तह़रीक को परवान चढ़ाया। (सीरते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी, स. 157 मुलख़्ख़सन)

इमाम ग़ज़ाली के गुस्ताख़ को डांटा (ह़िकायत)

एक मर्तबा एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی के सामने फ़लासिफ़ा की ता'रीफ़ करने लगा, उस का अन्दाज़ ऐसा था कि जिस से उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की तौहीन लाज़िम आती थी, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसे समझाते हुए फ़लासिफ़ा के रद में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی का फ़रमाने आ़ली सुनाया तो वोह शख़्स मुंह बिगाड़ कर कहने लगा : ग़ज़ाली ने ना मा'क़ूल बात कही है, مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی की शान में गुस्ताख़ाना जुम्ला सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को जलाल

www.dawateislami.net

आ गया ! फ़ौरन वहां से उठे और उसे डांटते हुए इर्शाद फ़रमाया : ''अगर अहले इल्म की सोह़बत का ज़ौक़ रखते हो तो ऐसी बे अ-दबी की बातों से अपनी ज़बान बन्द रखो ।'' (زُبْدَةُ الْمَقامات ص ١٣١)

गुस्ताख़ का इब्रतनाक अन्जाम (ह़िकायत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी भी मुसल्मान की तह़क़ीर दुन्या व आख़िरत दोनों ही के लिये नुक़्सान देह है लेकिन बुज़ुर्गाने दीन की गुस्ताख़ी की सज़ा बा'ज़ अवक़ात दुन्या में ही दी जाती है ताकि ऐसा शख़्स लोगों के लिये इब्रत का सामान बन जाए। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ताजुद्दीन अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ली सुबुकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक फ़क़ीह (या'नी आ़लिमे दीन) ने मुझे बताया कि एक शख़्स ने फ़िक़्हे शाफ़ेई के दर्स में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى को बुरा भला कहा, मैं इस पर बहुत ग़मगीन हुवा, रात इसी ग़म की कैफ़िय्यत में नींद आ गई । ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى की ज़ियारत हुई, मैं ने बुरा भला कहने वाले शख़्स का ज़िक्र किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''फ़िक्र मत कीजिये, वोह कल मर जाएगा ।'' सुब्ह़ जब मैं ह़ल्क़ए दर्स में पहुंचा तो उस शख़्स को हश्शाश बश्शाश (या'नी भला चंगा) देखा मगर जब वोह वहां से निकला तो घर जाते हुए रास्ते में सुवारी से गिरा और ज़ख़्मी हो गया, सूरज ग़ुरूब होने से क़ब्ल ही मर गया । (اِتحافُ السّادَة لِلزَّبِيدى ج ١ ص ١٤)

शौक़े तिलावत

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی सफ़र में तिलावते क़ुरआने करीम फ़रमाते रहते, बसा अवक़ात तीन तीन चार चार पारे भी मुकम्मल फ़रमा लिया करते थे । इस दौरान आयते सज्दा आती तो सुवारी से उतर कर सज्दए तिलावत फ़रमाते । (زُبْدَةُ الْمَقامات ص۲۰۷مُلَخَّصًا)

सुन्नत पर अ़मल का इन्आ़म (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی दीगर मुआ़-मलात की त़रह़ सोने जागने में भी **सुन्नत** का ख़याल फ़रमाया करते थे । एक बार **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़-शरे में तरावीह़ के बा'द आराम के लिये बे ख़यालो में बाईं (LEFT) करवट पर लैट गए, इतने में ख़ादिम पाउं दबाने लगा । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को अचानक ख़याल आया कि "दाईं (RIGHT) करवट पर लैटने की सुन्नत" छूट गई है । नफ़्स ने सुस्ती दिलाई कि भूले से ऐसा हो जाए तो कोई बात नहीं होती लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उठे और सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाईं (या'नी सीधी) करवट पर आराम फ़रमा हुए । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस सुन्नत पर अ़मल करते ही मुझ पर इ़नायात, ब-रकात और सिल्सिले के अन्वार का ज़ुहूर होने लगा और आवाज़ आई : "सुन्नत पर अ़मल की वज्ह से आप को आख़िरत में किसी क़िस्म का अ़ज़ाब न दिया जाएगा और आप के पाउं दबाने वाले ख़ादिम की भी मग़्फ़िरत कर दी गई ।" (ایضاً ص۱۸۰مُلَخَّصًا)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सुन्नत पर अ़मल

की कैसी ब-र-कतें हैं। अगर हम भी सुन्नत के मुत़ाबिक़ सोने की आ़दत बना लें तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-रकात नसीब होंगी। येह भी मा'लूम हुवा कि नेक बन्दों की ख़िदमत करना भी बहुत बड़ी सआ़दत का बाइ़स होता है।

सोने, जागने के 5 म-दनी फूल

۞ **सोने** से पहले येह दुआ़ पढ़ लीजिये : اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيَا **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे नाम के साथ ही मरता हूं और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं)। (بُخارِی ج٤ص١٩٦حدیث٦٣٢٥) ۞ सुन्नत यूं है कि "कुत़्ब तारे (या'नी शिमाल) की त़रफ़ सर करे और सीधी करवट पर सोए कि सोने में भी मुंह का'बे को ही रहे।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 385) दुन्या में हर जगह कुत़्ब तारा शिमाल की जानिब नहीं पड़ेगा लिहाज़ा दुन्या के किसी भी ह़िस्से में सोएं और सर या पाउं किसी भी सम्त हों बस "सीधी करवट इस त़रह़ सोएं कि चेहरा क़िब्ले की त़रफ़ रहे" सुन्नत अदा हो जाएगी ۞ **जागने के बा'द येह दुआ़ पढ़िये :** اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَآ اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ۔ **तरजमा :** तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें मारने के बा'द ज़िन्दा किया और उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है। (بُخارِی ج٤ص١٩٦حدیث٦٣٢٥) बहारे शरीअ़त जिल्द 3 सफ़ह़ा 436 पर है : (नींद से बेदार हो कर) उसी वक़्त पक्का इरादा करे कि परहेज़ गारी व तक़्वा करेगा किसी को सताएगा नहीं ۞ नींद से बेदार हो कर मिस्वाक कीजिये ۞ रात में नींद से बेदार हो कर तहज्जुद अदा कीजिये कि बड़ी सआ़दत है। सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन,

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''फ़र्ज़ों के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है।'' (مُسلِم ص۵۹۱ حدیث ۱۱۶۳)

मग़्फ़िरत की बिशारत

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने एक बार तह़्दीसे ने'मत के तौ़र पर फ़रमाया : एक दिन मैं अपने रु-फ़क़ा के साथ बैठा अपनी कमज़ोरियों पर ग़ौरो फ़िक्र कर रहा था, आ़जिज़ी व इन्किसारी का ग़-लबा था। इसी दौरान ब मिस्दाक़े ह़दीस : ''مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰہِ رَفَعَهُ اللّٰہُ'' या'नी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इन्किसारी करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है।''[1] **रब** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ख़िता़ब हुवा : ''غَفَرْتُ لَکَ وَلِمَنْ تَوَسَّلَ بِکَ بِوَاسِطَۃٍ اَوْبِغَیْرِ وَاسِطَۃٍ اِلٰی یَوْمِ الْقِیَامَۃ'' या'नी मैं ने तुम को बख़्श दिया और क़ियामत तक पैदा होने वाले उन तमाम लोगों को भी बख़्श दिया जो तेरे वसीले से बिल वासित़ा या बिला वासित़ा मुझ तक पहुंचें।'' इस के बा'द मुझे हुक्म दिया गया कि मैं इस बिशारत को ज़ाहिर कर दूं। (حَضَراتُ القُدُس، دفتر دُوُم ص ۱۰۴ مُلَخَّصًا)

सवाब का तोह़्फ़ा (ह़िकायत)

ह़ज़रते इमामे रब्बानी, मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی के सफ़रो ह़ज़र के ख़ादिम ह़ज़रत ह़ाजी ह़बीब अह़मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی के ''अजमेर शरीफ़'' क़ियाम के दौरान एक दिन मैं ने 70 हज़ार बार कलिमए त़य्यिबा पढ़ा और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मैं ने 70

[1] شُعَبُ الْاِیمان ج۶ ص۲۷۶ حدیث ۸۱۴۰

www.dawateislami.net

हज़ार बार कलिमा शरीफ़ पढ़ा है उस का सवाब आप की नज़्र करता हूं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़ौरन हाथ उठा कर दुआ फ़रमाई। अगले रोज़ फ़रमाया : कल जब मैं दुआ मांग रहा था तो मैं ने देखा : फ़िरिश्तों की फ़ौज उस कलिमए त़य्यिबा का सवाब ले कर आस्मान से उतर रही है उन की ता'दाद इस क़दर ज़ियादा थी कि ज़मीन पर पाउं रखने की जगह बाक़ी न रही ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मज़ीद फ़रमाया : इस ख़त्म का सवाब मेरे लिये निहायत मुफ़ीद साबित हुवा। इन्ही ह़ाजी साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है कि ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى ने मुझ से फ़रमाया : मैं ने जो कुछ बताया उस पर तअ़ज्जुब न करना, मैं अपना ह़ाल भी तुम्हें बताता हूं : मैं रोज़ाना तहज्जुद के बा'द पांच सो मर्तबा कलिमए त़य्यिबा पढ़ कर अपने मर्ह़ूम बच्चों मुह़म्मद ईसा, मुह़म्मद फ़ुर्रुख़ और बेटी उम्मे कुल्सूम को ईसाले सवाब करता था। हर रात उन की रूहें कलिमए त़य्यिबा के ख़त्म के लिये आमादा करती थीं। जब तक मैं तहज्जुद की अदाएगी के बा'द कलिमए त़य्यिबा का ख़त्म न कर लेता वोह रूहें मेरे इर्द गिर्द इसी त़रह़ चक्कर लगाती रहतीं जैसे बच्चे रोटी के लिये मां के गिर्द उस वक़्त तक मंडलाते रहते हैं जब तक उन्हें रोटी न मिल जाए। जब मैं कलिमए त़य्यिबा का ईसाले सवाब कर देता तो वोह रूहें वापस लौट जातीं। मगर अब कस्रते सवाब की वज्ह से वोह मा'मूर हैं और अब उन का आना नहीं होता। (ایضاً ص۹۵ مُلَخَّصًا)

ह़िकायत से ह़ासिल होने वाले म-दनी फूल

۞ ज़िन्दों को भी ईसाले सवाब किया जा सकता है ۞ मुर्दे

www.dawateislami.net

अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब और दोस्त अह़बाब की त़रफ़ से ईसाले सवाब के मुन्तज़िर रहते हैं ۞ मुर्दों को सवाब पहुंचता है और वोह सवाब पा कर मुत़्मइन हो जाते हैं ۞ ईसाले सवाब करना औलियाए किराम का त़रीक़ा रहा है।

हज़ार दाने वाली तस्बीह़

ह़ज़रते ह़ाजी ह़बीब अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : जिस दिन मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی को कलिमए त़य्यिबा का सवाब नज़्र किया उसी दिन से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने लिये एक हज़ार दाने वाली तस्बीह़ बनवाई और तन्हाई में उस पर कलिमए त़य्यिबा का विर्द फ़रमाने लगे। शबे जुमुआ़ को ख़ास त़ौर पर मुरीदीन के हमराह उसी तस्बीह़ पर एक हज़ार दुरूद शरीफ़ का विर्द फ़रमाया करते। **(حَضَرَاتُ الْقُدْس، دفتر دُوُم ص ٩٦)**

बीबी आ़इशा के ईसाले सवाब की ह़िकायत

इमामे रब्बानी, ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : पहले अगर मैं कभी खाना पकाता तो उस का सवाब हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم व ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ाति-मतुज़्ज़हरा व ह़ज़राते ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم की अरवाह़े मुक़द्दसा के लिये ही ख़ास ईसाले सवाब करता था। एक रात ख़्वाब में देखा कि जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं। मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में

सलाम अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी जानिब मु-तवज्जेह न हुए और चेहरए अन्वर दूसरी जानिब फैर लिया और मुझ से फ़रमाया : ''मैं **आइशा** के घर खाना खाता हूं, जिस किसी ने मुझे खाना भेजना हो वोह (ह़ज़रते) **आइशा** के घर भेजा करे ।'' उस वक़्त मुझे मा'लूम हुवा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवज्जोह न फ़रमाने का सबब येह था कि मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को शरीके़ त़आम (या'नी ईसाले सवाब) न करता था । इस के बा'द से मैं ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا बल्कि तमाम उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ को बल्कि सब अहले बैत को शरीक किया करता हूं और तमाम अहले बैत को अपने लिये वसीला बनाता हूं । (مکتوباتِ امام ربانی، دفتر دوم حصّہ ششم مکتوب ۳۶ ج ۲ ص ۸۵) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

तमाम औ़रतों में सब से प्यारी बीबी आ़इशा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि जिन को ईसाले सवाब किया जाता है उन को पहुंच जाता है येह भी पता चला कि ईसाले सवाब मह़दूद बुज़ुर्गों को करने के बजाए सभी को कर देना चाहिये । हम जितनों को भी ईसाले सवाब करेंगे सभी को बराबर बराबर ही पहुंचेगा और हमारे सवाब में भी कोई कमी न होगी ।[1] येह भी

1 : मज़ीद मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना से रिसाला ''फ़ातिह़ा और ईसाले सवाब का त़रीक़ा (सफ़ह़ात 28)'' हदिय्यतन ह़ासिल कर के पढ़िये ।

www.dawateislami.net

पता चला कि हमारे आक़ा, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से **बेह़द** उन्सियत रखते हैं। "बुख़ारी" शरीफ़ की रिवायत है, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه जब "ग़ज़्वए सलासिल" से वापस लौटे तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप को तमाम लोगों में सब से ज़ियादा मह़बूब कौन है ? फ़रमाया : (औ़रतों में) आ़इशा। उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की : मर्दों में ? फ़रमाया : इन के वालिद (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه)।

(بخاری ج ۲ ص ۵۱۹ حدیث ۳۶۶۲)

बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी — उस ह़रीमे बराअत पे लाखों सलाम
या 'नी है सूरए नूर जिन की गवाह — उन की पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 311)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वली वली को पहचानता है (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی जिन दिनों मर्कज़ुल औलिया लाहोर में क़ियाम पज़ीर थे उस दौरान एक सब्ज़ी फ़रोश आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाहे आ़ली में ह़ाज़िर हुवा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस की ता'ज़ीम के लिये खड़े हो गए। उस के जाने के बा'द आप से अ़र्ज़ की गई : वोह तो सब्ज़ी फ़रोश था ! (उस की ऐसी ता'ज़ीम ?) इर्शाद फ़रमाया : वोह अब्दाल (या'नी **वलिय्युल्लाह**) हैं, ख़ुद को छुपाने के लिये येह पेशा इख़्तियार कर रखा है।

(حَضَراتُ القُدس، دفتر دُوُم ص۹۸)

www.dawateislami.net

''सरहिन्द शरीफ़'' के नव हुरूफ़ की निस्बत से 9 करामात

﴾1﴿ एक वक़्त में दस घरों में तशरीफ़ आ-वरी (हिकायत)

हज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी **शैख़ अहमद** सरहिन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को दस मुरीदों में से हर एक ने **माहे र-मज़ानुल मुबारक** में एक ही दिन इफ़्तार की दा'वत दी, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सब की दा'वत क़बूल फ़रमा ली, जब ग़ुरूबे आफ़्ताब का वक़्त हुवा तो एक ही वक़्त में सब के पास तशरीफ़ ले गए और उन के साथ रोज़ा इफ़्तार फ़रमाया। (جامع کرامات الاولیاء للنبہانی ج ۱ ص ۵۵۶)

﴾2﴿ फ़ौरन बारिश बन्द हो गई (हिकायत)

एक मर्तबा बारिश बरस रही थी तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने आस्मान की त़रफ़ नज़र उठाई और बारिश से इर्शाद फ़रमाया : **''फ़ुलां वक़्त तक रुक जा !''** चुनान्चे बारिश उसी वक़्त तक थम (या'नी रुक) गई। (ایضاً ج ۱ ص ۵۵۶)

﴾3﴿ इसे हाथी के पाउं तले कुचल्वा दिया जाए

एक अमीर ज़ादे से बादशाह नाराज़ हो गया और उसे मर्कज़ुल औलिया लाहोर से सरहिन्द त़लब किया। उस के बारे में येह हुक्म जारी किया कि जैसे ही येह आए तो इसे हाथी के पाउं के नीचे कुचल्वा दिया जाए। वोह अमीर ज़ादा जब सरहिन्द पहुंचा तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हो कर निहायत ही आ़जिज़ी के साथ अपनी नजात के लिये अ़र्ज़ गुज़ार हुवा।

www.dawateislami.net

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कुछ देर मुरा-क़बा किया फिर फ़रमाया : बादशाह की त़रफ़ से तुम्हें कोई तक्लीफ़ नहीं पहुंचेगी बल्कि वोह तुम पर मेह्रबान होगा। उस अमीर ज़ादे ने अ़र्ज़ की : आ़लीजाह ! आप लिख कर दे दीजिये ताकि येह तह़रीर मेरी तस्कीने क़ल्बी (या'नी दिल के सुकून) का सामान हो। चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस की तसल्ली के लिये येह तह़रीर फ़रमाया : "येह शख़्स बादशाह के ग़ुस्से के ख़ौफ़ से यहां आया है लिहाज़ा इस फ़क़ीर ने अपनी ज़मानत में ले कर इसे इस मुसीबत से रिहाई दे दी।" वोह अमीर ज़ादा जैसे ही बादशाह के दरबार में पहुंचा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इर्शाद के मुत़ाबिक़ बादशाह ने उसे देखा तो मुस्कुराया और नसीह़त के त़ौर पर चन्द बातें कहीं और निहायत मेह्रबानी के साथ इन्आ़मो इक्राम से नवाज़ कर रुख़्सत कर दिया।

(حَضَراتُ الْقُدْس، دفتر دُوُم ص ۱۷۰ ملخّصاً)

﴿4﴾ बच्चे के बारे में ग़ैबी ख़बर दी (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي के एक अ़ज़ीज़ के हां बेटा पैदा तो होता लेकिन छोटी उ़म्र में ही फ़ौत हो जाता। एक बार जब बेटा पैदा हुवा तो वोह बच्चे को ले कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुवा और सारा माजरा सुनाया और अ़र्ज़ की, कि हम ने मन्नत मानी है कि अगर येह बच्चा बड़ा हुवा तो हम इसे आप की ग़ुलामी में दे देंगे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "इस का नाम अ़ब्दुल ह़क़ रखो, येह ज़िन्दा रहेगा और बड़ी उ़म्र पाएगा, लेकिन हर माह ह़ज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد की

नियाज़ दिलवाते रहो।" اَلْحَمْدُ لِلّٰه आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़रमान की ब-र-कत से वोह बच्चा बड़ी उ़म्र को पहुंचा। **(ایضاً ص ۲۰۵ملخّصاً)**

﴾5﴿ दिल की बात जान ली ! (हिकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی के एक मुरीद का बयान है कि मैं छुप कर अफ़्यून खाया करता था और इस बारे में किसी को भी मा'लूम नहीं था। एक दिन मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हमराह जा रहा था तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मेरी त़रफ़ देख कर फ़रमाया : क्या बात है मैं तुम्हारे दिल में तारीकी (या'नी अंधेरा) देखता हूं ? मैं ने इक़्रार किया कि मैं छुप कर अफ़्यून खाता हूं लेकिन अब इस से तौबा करता हूं। **(ایضاً)**

﴾6﴿ मांग क्या मांगता है ? (हिकायत)

एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی तन्हाई में तशरीफ़ फ़रमा थे और एक नौ मुस्लिम (या'नी नया मुसल्मान) आप की ख़िदमते बा ब-र-कत में मौजूद था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से फ़रमाया : "मांग क्या मांगता है ? जो मांगेगा वोही मिलेगा।" उस ने अ़र्ज़ किया : "आ़लीजाह ! मेरा भाई और वालिदा अपने कुफ़्र में बड़ी शिद्दत (या'नी सख़्ती) रखते हैं, मेरी बहुत कोशिश के बा वुजूद वोह इस्लाम क़बूल नहीं करते, आप तवज्जोह फ़रमा दीजिये कि वोह मुसल्मान हो जाएं।" फ़रमाया : इस के इलावा कुछ और भी चाहिये ? अ़र्ज़ की : आप की तवज्जोह से मुझे भलाइयां मिल जाएंगी, लेकिन अभी येही ख़्वाहिश है कि वोह मुसल्मान हो जाएं। फ़रमाया : "वोह बहुत जल्द

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (فردوس الاخبار)

मुसल्मान हो जाएंगे ।" आप رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ के फ़रमाने के तीसरे दिन उस का भाई और वालिदा दोनों सरहिन्द शरीफ़ आ कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए । (ایضاً ص۲۰۳ ملخصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عزّوجلّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم

«7» मुरीद की मदद फ़रमाई (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی के मुरीदे ख़ास सय्यिद जमाल एक रोज़ किसी वादी से गुज़र रहे थे कि अचानक एक शेर सामने आ गया ! उन के क़दम वहीं जम गए, आनन फ़ानन अपने मुर्शिद ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी की बारगाह में अ़र्ज़ की : बचाइये ! उसी वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ हाथ में अ़सा (STICK) थामे अपने मुरीद की दस्त–गीरी (या'नी मदद) के लिये तशरीफ़ ले आए, शेर को अ़सा मारा, जब सय्यिद जमाल साहिब ने आंख खोली तो शेर का कहीं नामो निशान न था और ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی भी तशरीफ़ ले जा चुके थे ।

(زُبْدَۃُ الْمَقامات ص۲۶۳ مُلَخَّصاً)

शेरों पे शरफ़ रखते हैं दरबार के कुत्ते   शाहों से भी बढ़ कर हैं गदायाने मुह़म्मद

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

«8» बद अ़क़ी–दगी का ख़्वाब में इलाज फ़रमा दिया (ह़िकायत)

एक शख़्स बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان बिल ख़ुसूस ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رضی اللہ تعالیٰ عنہ से مَعَاذَ اللہ عزّوجلّ कीना रखता

था। एक दिन वोह "मक्तूबाते इमामे रब्बानी" का मुता़-लआ़ कर रहा था, कि उस में येह इ़बारत पढ़ी : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को बुरा कहने को ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا को बुरा कहने के बराबर क़रार दिया है।" तो वोह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रन्जीदा हो गया और (مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ) मक्तूबात शरीफ़ की किताब ज़मीन पर फेंक दी। जब वोह शख़्स सोया तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی उस के ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه निहायत जलाल में उस के दोनों कान पकड़ कर फ़रमाने लगे : "तू हमारी तह़रीर पर ए'तिराज़ करता और उसे ज़मीन पर फेंकता है! अगर तू मेरे क़ौल (या'नी बात) को मो'तबर नहीं समझता तो आ! तुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ही के पास ले चलूं, जिन की ख़ातिर तू सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बुरा कहता है।" फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उसे ऐसी जगह ले गए जहां एक नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग तशरीफ़ फ़रमा थे। ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने निहायत आ़जिज़ी से उस बुज़ुर्ग को सलाम किया फिर उस शख़्स को नज़्दीक बुला कर फ़रमाया : येह तशरीफ़ फ़रमा बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم हैं, सुन! क्या फ़रमाते हैं। उस शख़्स ने सलाम किया, सय्यिदुना शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने उसे सलाम का जवाब देने के बा'द फ़रमाया : ख़बरदार! रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के

www.dawateislami.net

सह़ाबा से कदूरत (या'नी रन्जिश) न रखो, इन के बारे में कोई गुस्ताख़ाना जुम्ला ज़बान पर न लाओ । फिर ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی की जानिब इशारा कर के उस से फ़रमाया : "इन की तह़रीर से हरगिज़ न फिरना (या'नी मुख़ा-लफ़त मत करना) ।" इस नसीह़त के बा'द भी उस के दिल से सह़ाबए किराम का कीना दूर न हुवा तो मौलाए काएनात ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : इस का दिल अभी तक साफ़ नहीं हुवा । येह फ़रमा कर ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی से थप्पड़ रसीद करने का फ़रमाया, हुक्म की ता'मील करते हुए जूं ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने गुद्दी पर थप्पड़ मारा तो दिल से सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सारी कदूरत (या'नी नफ़रत) धुल गई । जब वोह बेदार हुवा तो उस का दिल सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मह़ब्बत से मा'मूर था और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मह़ब्बत भी सो गुना ज़ियादा बढ़ चुकी थी । **(حَضَرَاتُ الْقُدْس، دفتر دُوُم ص۱۶۷ مُلَخَّصًا)**

﴾9﴿ अपनी वफ़ात की पहले ही ख़बर दे दी (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने अपने इन्तिक़ाल से बहुत पहले ही अपनी ज़ौजए मोह़-त-रमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا से फ़रमा दिया था कि मुझ पर ज़ाहिर कर दिया गया है कि मेरा इन्तिक़ाल तुम से पहले हो जाएगा चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उन से पहले विसाल (या'नी इन्तिक़ाल) फ़रमा गए । **(ایضاً ص۲۰۸ مُلَخَّصًا)**

मिट्टी का कोना टूटा हुवा पियाला (ह़िकायत)

सिल्सिलए आ़लिय्या नक़्शबन्दिय्या के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने एक दिन आ़म बैतुल ख़ला में भंगी के पास सफ़ाई के लिये गन्दगी से आलूद बड़ा सा मिट्टी का कोना टूटा हुवा पियाला देखा तो बेताब हो गए क्यूं कि उस पियाले पर लफ़्ज़, ''**अल्लाह**'' कन्दा था ! लपक कर पियाला उठा लिया और ख़ादिम से पानी का आफ़्ताबा (या'नी ढक्कन वाला दस्ता लगा हुवा लोटा) मंगवा कर अपने दस्ते मुबारक से ख़ूब मल मल कर अच्छी त़रह़ धो कर उस को पाक किया, फिर एक सफ़ेद कपड़े में लपेट कर अदब के साथ ऊंची जगह रख दिया । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उसी पियाले में पानी पिया करते । एक दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को इल्हाम फ़रमाया गया : ''जिस त़रह़ तुम ने मेरे नाम की ता'ज़ीम की मैं भी दुन्या व आख़िरत में तुम्हारा नाम ऊंचा करता हूं।'' आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाया करते थे : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नामे पाक का अदब करने से मुझे वोह मक़ाम ह़ासिल हुवा जो सो साल की इ़बादतो रियाज़त से भी ह़ासिल न हो सकता था।''

(ایضاً ص١٠٦)

सादा काग़ज़ का भी अदब

सिल्सिलए आ़लिय्या नक़्शबन्दिय्या के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद सरहिन्दी अल मा'रूफ़ मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی सादा काग़ज़ का भी एह़तिराम फ़रमाते थे, चुनान्चे एक रोज़ अपने बिछोने पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि यकायक बे क़रार हो कर नीचे उतर आए और फ़रमाने लगे : मा'लूम होता है, इस बिछोने के नीचे कोई काग़ज़ है ।

(زُبْدَةُ الْمَقامات ص١٩٤)

www.dawateislami.net

राह चलते हुए काग़ज़ात को लात मत मारिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, सादा काग़ज़ का भी अदब है और क्यूं न हो कि इस पर क़ुरआन व ह़दीस और इस्लामी बातें लिखी जाती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बयान कर्दा ह़िकायत में ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی की खुली करामत है कि बिछोने के नीचे के काग़ज़ का ज़ाहिरी त़ौर पर बिन देखे पता चल गया और आप नीचे उतर आए ताकि ग़ुलामों को भी काग़ज़ात के अदब की तरग़ीब मिले। ''बहारे शरीअ़त'' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 411 पर है : ''काग़ज़ से इस्तिन्जा मन्अ़ है अगर्चे उस पर कुछ भी न लिखा हो या अबू जह्ल ऐसे काफ़िर का नाम लिखा हो।''

ह़ुरूफ़ की ता'ज़ीम की जाए

फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ में है : ''हमारे उ़-लमा तसरीह़ (या'नी वाज़ेह़ त़ौर पर) फ़रमाते हैं कि नफ़्से ह़ुरूफ़ क़ाबिले अदब हैं अगर्चे जुदा जुदा लिखे हों जैसे तख़्ती या वस्ली (काग़ज़) पर ख़्वाह उन में कोई बुरा नाम लिखा हो जैसे फ़िरऔ़न, अबू जह्ल वग़ैरहुमा ताहम ह़ुरूफ़ की ता'ज़ीम की जाए अगर्चे इन काफ़िरों का नाम लाइक़े इहानत व तज़्लील है।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 336) ख़ुद अबू जह्ल की कोई ता'ज़ीम नहीं कि येह तो सख़्त काफ़िर था मगर चूंकि लफ़्ज़े ''अबू जह्ल'' के तमाम ह़ुरूफ़े तहज्जी (ا ب و ج ہ ل) क़ुरआनी हैं। इस लिये लिखे हुए लफ़्ज़ ''अबू जह्ल'' के ह़ुरूफ़ की (न कि शख़्से अबू जह्ल की) इन मा'नों पर ता'ज़ीम है कि उस को नापाक या गन्दी जगहों पर

डालने और जूते मारने वग़ैरा की इजाज़त नहीं। फ़तावा आ़लमगीरी में है : "जब फ़िरऔ़न या अबू जह्ल का नाम किसी हदफ़ या निशाने पर लिखा हो तो (निशाना बना कर) इन की त़रफ़ तीर फेंकना मक्रूह है कि इन हुरूफ़ की भी इ़ज़्ज़तो तौक़ीर है।" (عالمگیری ج٥ص٣٢٣) अलबत्ता टिशू पेपर से हाथ पोंछने या टॉयलेट पेपर से जा-ए इस्तिन्जा ख़ुश्क करने की उ़-लमाए किराम इजाज़त देते हैं क्यूं कि येह इसी काम के लिये तय्यार किये जाते हैं और इन पर कुछ लिखा नहीं जाता।

जवानी कैसे गुज़ारें ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उ़म्र का कोई सा भी ह़िस्सा हो नफ़्सानी ख़्वाहिशात को पूरा करने में लगे रहने में भलाई नहीं और नफ़्स की शरारत जवानी के ज़माने में तो उ़रूज (या'नी बुलन्दी) पर होती है, नफ़्स को इ़ल्मो अ़मल की लगाम डाल कर इस की तरबियत करने का येही वक़्त होता है। ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने भी इस जानिब तवज्जोह दिलाई है चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "जवानी की इब्तिदा जिस त़रह़ हवा व हवस (या'नी ख़्वाहिशात के उभरने) का वक़्त है, इसी त़रह़ इ़ल्मो अ़मल को अपनाने का भी येही वक़्त है, जवानी में की जाने वाली इ़बादात बुढ़ापे की इ़बादात से अफ़्ज़ल हैं।" (مکتوباتِ امامِ ربّانی، دفتر سوم، حصّہ ہشتم، مکتوب ٣٥ ج٢ص٨٧ ملخصًا)

जवानी ने'मते ख़ुदावन्दी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अय्यामे जवानी के अवक़ात की क़द्रदानी बहुत ज़रूरी है क्यूं कि **जवानी** में इन्सान के आ'ज़ा मज़बूत़

www.dawateislami.net

और त़ाक़त वर होते हैं, जिस की वज्ह से अह़काम व इबादात की बजा आ-वरी, ख़ुश उस्लूबी के साथ मुम्किन होती है, बुढ़ापे में येह बहारें कहां नसीब ! उस वक़्त तो मस्जिद तक जाना भी दुश्वार हो जाता है । भूक प्यास की शिद्दत बरदाश्त करने की भी हिम्मत नहीं रहती, नफ़्ल तो कुजा फ़र्ज़ रोज़े पूरे करने भी भारी पड़ जाते हैं । जवानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बहुत बड़ी ने'मत है, जिसे येह ने'मत मिले उसे इस की क़द्र करते हुए ज़ियादा से ज़ियादा वक़्त इबादत व इत़ाअ़त में गुज़ारना चाहिये, अवक़ात के अनमोल हीरों को नफ़्अ़ मन्द बनाना चाहिये । ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان नक़्ल फ़रमाते हैं : ''जवानी की इबादत बुढ़ापे की इबादत से अफ़्ज़ल है कि इबादात का अस्ल वक़्त जवानी है । शे'र

कर जवानी में इबादत काहिली अच्छी नहीं जब बुढ़ापा आ गया कुछ बात बन पड़ती नहीं
है बुढ़ापा भी ग़नीमत जब जवानी हो चुकी येह बुढ़ापा भी न होगा मौत जिस दम आ गई

वक़्त की क़द्र करो, इसे ग़नीमत जानो, गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं ।'' (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 167)

ह़ाफ़िज़े क़ुरआन का अदब

एक मर्तबा एक ह़ाफ़िज़ साह़िब ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي के पास बैठ कर क़ुरआने करीम की तिलावत कर रहे थे । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जब उन की त़रफ़ निगाह फ़रमाई तो देखा कि जिस जगह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तशरीफ़ फ़रमा हैं वोह जगह ह़ाफ़िज़ साह़िब वाली जगह से थोड़ी ऊंची है । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़ौरन अपनी निशस्त (या'नी बैठक) नीची कर दी । (زُبْدَةُ الْمَقامات ص۱۹۵)

www.dawateislami.net

मुजद्दिदे अल्फ़े सानी के 40 मा'मूलात

❁ **सफ़र** हो या ह़ज़र, सरदी हो या गरमी, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आधी रात के बा'द बेदार हो जाते और मस्नून दुआ़एं पढ़ते ❁ पाबन्दी से तहज्जुद अदा फ़रमाते और तहज्जुद में त़वील क़िराअत करते ❁ क़िब्ला रू बैठ कर वुज़ू फ़रमाते और ❁ वुज़ू में किसी से मदद न लेते ❁ वुज़ू में मिस्वाक फ़रमाते, फ़राग़त के बा'द कातिब (या'नी लिखने वाले) की त़रह़ मिस्वाक कभी कान पर लगा लेते और कभी ख़ादिम के सिपुर्द फ़रमा देते ❁ वुज़ू के दौरान तमाम सुनन व मुस्तह़ब्बात का ख़ूब ख़याल फ़रमाते ❁ आ'ज़ाए वुज़ू धोते वक़्त और वुज़ू के बा'द मस्नून दुआ़एं पढ़ते ❁ नमाज़ के लिये उ़म्दा लिबास ज़ैबे तन फ़रमाते और निहायत वक़ार के साथ नमाज़ की अदाएगी के लिये तय्यार हो जाते ❁ नमाज़े फ़ज्र की सुन्नतें घर में अदा फ़रमाते ❁ फ़ज्र के फ़र्ज़ मस्जिद में जमाअ़ते कसीरा (या'नी बहुत बड़ी जमाअ़त) के साथ अदा फ़रमाते ❁ नमाज़ से फ़राग़त के बा'द मस्नून दुआ़एं पढ़ते, फिर दाईं या बाईं जानिब रुख़ फ़रमा कर दुआ़ फ़रमाते और दुआ़ के बा'द दोनों हाथ चेहरे पर फैर लेते ❁ नमाज़ के बा'द ज़िक्र, तिलावते क़ुरआने करीम का ह़ल्क़ा क़ाइम करते और इब्तिदाई त़ालिबे इ़ल्मों की तरबियत फ़रमाते ❁ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अक्सर ख़ामोश रहा करते ❁ बा'ज़ अवक़ात आप पर गिर्या (या'नी रोना) त़ारी हो जाता और आंखों से सैले अश्क रवां हो जाया करता (या'नी ख़ूब रोते) ❁ नमाज़े चाश्त पाबन्दी से अदा फ़रमाते ❁ आप निहायत ही कम खाना तनावुल फ़रमाते ❁ खाने से पहले और

बा'द की दुआ़एं पढ़ते ❁ (दिन में) खाने के बा'द थोड़ी देर के लिये क़ैलूला फ़रमाते ❁ अज़ान सुन कर जवाब देते ❁ नमाज़े ज़ोह्र के बा'द फिर ज़िक्रे इलाही का ह़ल्क़ा क़ाइम करते, इस के बा'द एक दो सबक़ की तदरीस फ़रमाते ❁ तह़िय्यतुल मस्जिद पाबन्दी से अदा फ़रमाते ❁ नमाज़े मग़रिब के बा'द अव्वाबीन के छ[6] नवाफ़िल अदा फ़रमाते ❁ नमाज़े वित्र की अदाएगी के बा'द सुन्नत के मुत़ाबिक़ क़िब्ला रुख़ हो कर सीधा हाथ दाएं रुख़्सार के नीचे रख कर आराम फ़रमा होते ❁ सूरज या चांद ग्रहन होने पर नमाज़े कुसूफ़ व ख़ुसूफ़ अदा फ़रमाते ❁ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़-शरे में ए'तिकाफ़ फ़रमाते ❁ ज़ुल ह़िज्जा के इब्तिदाई अ़-शरे (या'नी शुरूअ़ के दस दिन) में मख़्लूक़ से कनारा कश हो कर इ़बादत का एहतिमाम फ़रमाते ❁ कसरत से दुरूदे पाक पढ़ते और ख़ुसूसन शबे जुमुआ़ मुरीदों के साथ मिल कर एक हज़ार दुरूदे पाक का नज़राना बारगाहे रिसालत में पेश करते ❁ सफ़रो ह़ज़र में तरावीह़ की मुकम्मल बीस रक्अ़तें ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ से अदा फ़रमाते ❁ **र-मज़ानुल मुबारक** में कम अज़ कम तीन मर्तबा क़ुरआने करीम का ख़त्म फ़रमाते ❁ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه चूंकि ह़ाफ़िज़े क़ुरआन थे इस लिये अक्सर तिलावते क़ुरआने करीम का सिल्सिला जारी रहता ❁ दौराने सफ़र भी तिलावत फ़रमाते और अगर इस दौरान आयते सज्दा आ जाती तो फ़ौरन सुवारी से उतर कर सज्दए तिलावत अदा फ़रमाते ❁ इन्फ़िरादी नमाज़ में रुकूअ़ व सुजूद की तस्बीह़ात पांच, सात, नव या ग्यारह मर्तबा तक अदा फ़रमाते ❁ सफ़र

के लिये अक्सर आप पीर या जुमा'रात के दिन का इन्तिख़ाब फ़रमाते ❁ कपड़ा पहनने, आईना देखने, पानी पीने, खाना खाने, चांद देखने और दीगर मा'मूलात में जो मस्नून दुआएं मरवी हैं उन का एहतिमाम फ़रमाते ❁ नमाज़ की तमाम सुन्नतों और मुस्तहब्बात का ख़ूब एहतिमाम फ़रमाते ❁ जब कोई बुज़ुर्ग आप से मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाते तो ता'ज़ीमन खड़े हो जाते ❁ सलाम में हमेशा पहल फ़रमाते ❁ अ़ल्लामा बदरुद्दीन सरहिन्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे इल्म नहीं कि कभी कोई शख़्स सलाम में आप से सब्क़त ले गया (या'नी पहल करने में काम्याब हुवा) हो ❁ सर पर इमामा शरीफ़ सजाए रखते ❁ पाजामा हमेशा टख़्नों से ऊपर हुवा करता। (حَضَراتُ القُدُس، دفتر دُوُم ص ۸۰ تا ۹۲ مُلَخَّصًا)

हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी का इमामा शरीफ़

हज़रते सय्यिदुना इमामे रब्बानी, मुजद्दिदे अल्फ़े सानी, शैख़ अहमद फ़ारूक़ी सरहिन्दी नक़्शबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के मु-तअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि इमामा शरीफ़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सरे मुबारक पर होता और शम्ला दोनों कन्धों के दरमियान होता। (ایضاً ص ۹۲ مُلَخَّصًا)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहादीसे मुबा-रका में इमामा शरीफ़ बांधने के बहुत से फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं : चुनान्चे

बा इमामा नमाज़ दस हज़ार नेकियों के बराबर

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इमामे के साथ नमाज़ दस हज़ार नेकी के बराबर है।

(اَلْفِرْدَوْس بماْثور الْخِطّاب ج ۲ ص ۴۰۶ حدیث ۳۸۰۵, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 213)

क्या इमामा सिर्फ़ उ़-लमा ही बांधें ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद वक़ारुद्दीन क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی एक सुवाल के जवाब में फ़रमाते हैं : इमामा सिर्फ़ उ़-लमा व मशाइख़ ही के लिये नहीं बल्कि तमाम मुसल्मानों के लिये सुन्नत है और इमामे की फ़ज़ीलत और इमामा बांध कर नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत अह़ादीस में बयान की गई है इस लिये हर बालिग़ मर्द के लिये इमामा बांधना सवाब का काम है और अच्छे काम की आ़दत डालने के लिये बच्चों को भी इस की ता'लीम देनी चाहिये।

(वक़ारुल फ़तावा, जि. 2, स. 252)

आ़लिम और जाहिल सब इमामा बांधें

बह़रुल उ़लूम ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुल मन्नान आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی एक सुवाल (आ़म मुसल्मान या'नी ग़ैरे आ़लिम को इमामा बांधना सुन्नत है या नहीं ?) के जवाब में इर्शाद फ़रमाते हैं : हर मुसल्मान चाहे आ़लिम हो या ग़ैरे आ़लिम उसे इमामा बांधना सुन्नत है, इमाम बैहक़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **शु-अ़बुल ईमान** में ह़ज़रते (सय्यिदुना) उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत की, कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : "इमामा बांधना इख़्तियार करो कि येह फ़िरिश्तों का निशान है और इस (शम्ले) को पीठ के पीछे निकालो।" **[شعب الایمان ج٥ص١٧٦ حدیث:٦٢٦٢]** "बहारे शरीअ़त" में है कि इमामा बांधना सुन्नत है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 418) इन अह़काम से येही ज़ाहिर है कि मुसल्मान ख़्वाह आ़लिम हो या चाहे जाहिल सब को इमामा

www.dawateislami.net

बांधने का हुक्म है । (फ़तावा बहरुल उ़लूम, जि. 5, स. 411 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इत्तिबाए सुन्नत इश्क़े रसूल की अ़लामत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सच्चे आ़शिक़े रसूल की अ़लामत येह है कि वोह अपनी ज़िन्दगी नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत के मुताबिक़ गुज़ारने की कोशिश करता है, यूं सुन्नते न-बवी को अ़-मली तौ़र पर अपनाने की वज्ह से आ़शिक़े सादिक़ का दिल इश्क़े मुस्तफ़ा में तड़पता है । ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي का हर अ़मल सुन्नते मुस्तफ़ा की अ़-मली तस्वीर हुवा करता, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी गुफ़्त-गू, चलने फिरने और ज़िन्दगी के दीगर मा'मूलात सुन्नत के मुताबिक़ गुज़ारते, सुन्नतों की ब-र-कत से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को जो मक़ामो मर्तबा नसीब हुवा उस के मु-तअ़ल्लिक़ आप ख़ुद इर्शाद फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कमाले इत्तिबाअ़ (या'नी मुकम्मल पैरवी) की वज्ह से मुझे ऐसे मक़ाम से सरफ़राज़ किया गया जो ''मक़ामे रिज़ा'' से भी बुलन्दो बाला है । (حَضَرَاتُ الْقُدْس، دفتر دُوُم ص۷۷) सुन्नतों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना बहुत बड़ी सआ़दत है कि इस की ब-र-कत से मक़ामे मह़बूबिय्यत नसीब होता है जैसा कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ुद इर्शाद फ़रमाते हैं : ''हर वोह चीज़ जिस में मह़बूब के अख़्लाक़ व आ़दात पाई जाएं मह़बूब के साथ वाबस्तगी और उस के ताबेअ़ होने की वज्ह से वोह भी मह़बूब और प्यारी हो जाती है, इस की त़रफ़ इस आयत में इशारा

फ़रमाया गया है :

فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ

(پ۳،اٰلِ عمرٰن:۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ **अल्लाह** तुम्हें दोस्त रखेगा।

लिहाज़ा **अल्लाह तआ़ला** के प्यारी नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी में कोशिश करना बन्दे को मक़ामे महबूबिय्यत तक ले जाता है, तो हर अ़क़्ल मन्द पर लाज़िम है कि **अल्लाह तआ़ला** के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इत्तिबाअ़ में ज़ाहिरन व बात़िनन पूरी कोशिश करे।''

(مکتوباتِ امامِ ربّانی، دفتر اول، حصہ دوم، مکتوب ۴۱، ج۱ص۵)

तसानीफ़

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की तसानीफ़ में से फ़ारसी **''मक्तूबाते इमामे रब्बानी''** मश्हूर हुए। इन के अ़-रबी, उर्दू, तुर्की और अंग्रेज़ी ज़बानों में तराजिम भी शाएअ़ हो चुके हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के चार रसाइल के नाम मुला-ह़ज़ा हों : (1) इस्बातुन्नुबुव्वह (2) रिसालए तह्लीलिय्यह (3) मआ़रिफ़े लदुन्निय्यह (4) शर्ह़े रुबाइ़यात।

मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی के 11 अक़्वाल

❁ **ह़लाल** व ह़राम के मुआ़-मले में हमेशा बा अ़मल उ़-लमा से रुजूअ़ करना चाहिये और उन के फ़तावा के मुत़ाबिक़ अ़मल करना चाहिये क्यूं कि नजात का ज़रीआ़ शरीअ़त ही है। (ایضاً، حصہ سوم، مکتوب ۱۶۳، ج۱ص۴۶)

❁ **अह़कामे** शरीअ़त की सह़ीह़ नौ़इ़यत उ़-लमाए आख़िरत से मा'लूम कीजिये इन के कलाम में एक तासीर है, शायद इन के मुबारक कलिमात

www.dawateislami.net

की ब-र-कत से अ़मल की भी तौफ़ीक़ मिल जाए। (ایضاً، حصّہ دوم، مکتوب ۷۳ ج ۱ ص ۵۹)

❁ तमाम कामों में उन बा अ़मल उ़-लमाए किराम के फ़तावा के मुताबिक़ ज़िन्दगी बसर करनी चाहिये जिन्हों ने ''अ़ज़ीमत'' का रास्ता इख़्तियार कर रखा है और ''रुख़्सत'' से इज्तिनाब करते (या'नी बचते) हैं नीज़ इस को नजाते अ-बदी व उख़्वी का ज़रीआ़ व वसीला क़रार देना चाहिये। (ایضاً، مکتوب ۷۰ ج ۱ ص ۵۲)

❁ नजाते आख़िरत तमाम अफ़्आ़ल व अक़्वाल, उसूल व फ़ुरूअ़ में अहले सुन्नत की पैरवी करने पर मौक़ूफ़ है। (ایضاً، مکتوب ۶۹ ج ۱ ص ۵۰)

❁ सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का साया न था। (ایضاً، دفتر سوم، حصّہ نہم، مکتوب ۱۰۰ ج ۲ ص ۷۵)

❁ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने ख़ास इ़ल्मे ग़ैब पर अपने ख़ास रसूलों को मुत्तलअ़ (या'नी बा ख़बर) फ़रमाता है। (ایضاً، دفتر اوّل، حصّہ پنجم، مکتوب ۳۱۰ ج ۱ ص ۱۶۰)

❁ हुज़ूर शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तमाम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को ज़िक्रे ख़ैर (भलाई) के साथ याद करना चाहिये। (ایضاً، حصّہ چہارم، مکتوب ۲۶۶ ج ۱ ص ۱۳۲)

❁ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में सब से अफ़्ज़ल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हैं फिर इन के बा'द सब से अफ़्ज़ल सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हैं, इन दोनों बातों पर सह़ाबए किराम और ताबेईने किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का इज्माअ़ है, नीज़ इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा व इमामे शाफ़ेई व इमामे मालिक व इमामे अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن और अक्सर उ़-लमाए अहले सुन्नत के नज़्दीक

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के बा'द तमाम सह़ाबए किराम में सब से अफ़्ज़ल सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हैं, फिर इन के बा'द सब से अफ़्ज़ल सय्यिदुना मौला अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم हैं। (ایضاً، مکتوب ۲۶۶ ج ۱ ص ۱۲۹، ۱۳۰ ملخصا)

❁ मजलिसे मीलाद शरीफ़ में अगर अच्छी आवाज़ के साथ क़ुरआने करीम की तिलावत की जाए, ना'त शरीफ़ और सह़ाबा व अहले बैत व औलियाए कामिलीन رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की मन्क़बत पढ़ी जाए तो इस में क्या ह़रज है! (مکتوباتِ امامِ ربّانی، دفترِ سوم، حصّۂ ہشتم، مکتوب ۷۲ ج ۲ ص ۱۰۷ ملخصا)

❁ हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कमाले मह़ब्बत की अ़लामत येह है कि आदमी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुश्मनों से कामिल दुश्मनी रखे। (ایضاً، دفترِ اوّل، حصّۂ سوم، مکتوب ۱۶۵ ج ۱ ص ۴۸ ملخصا)

गाना बजाना ज़ह्रे क़ातिल है

❁ **ह़ज़रते** सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : गाने बजाने की ख़्वाहिश मत कीजिये, न इस की लज़्ज़त ही पर फ़िदा हों क्यूं कि येह शह्द मिला क़ातिल ज़ह्र है। (ایضاً، دفترِ سوم، حصّۂ ہشتم، مکتوب ۳۴ ج ۲ ص ۸۶ ملخصا)

कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गाने बाजे सुनना सुनाना शैत़ानी अफ़्आ़ल हैं, सआ़दत मन्द मुसल्मान इन चीज़ों के क़रीब भी नहीं फटक्ते। गाने बाजों से बचना बेह़द ज़रूरी है कि इस का अ़ज़ाब किसी से भी न सहा जा सकेगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है :

www.dawateislami.net

जो शख़्स किसी गाने वाली के पास बैठ कर गाना सुनता है क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के कानों में पिघला हुवा सीसा उंडेलेगा।

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج ۷ ص ۲۵٤ حدیث ۲۲۸٤۳)

मनाक़िबे ग़ौसे समदानी ब ज़बाने मुजद्दिदे अल्फ़े सानी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत''** सफ़ह़ा 422 पर है : ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : जो कुछ फ़ुयूज़ो ब-रकात का मज्मअ़ है वोह सब सरकारे ग़ौसिय्यत से मिले हैं। نُوْرُ الْقَمَرِ مُسْتَفَادٌ مِنْ نُورِ الشَّمْس या'नी चांद की रोशनी सूरज के नूर से मुस्तफ़ाद है। (مکتوباتِ امام ربّانی، دفتر سوم، حصّہ نہم، مکتوب ۱۲۳ ج ۲ ص ۱٤۵ ملخّصًا)

मुजद्दिदे अल्फ़े सानी और आ'ला ह़ज़रत

(पांच मिलती जुलती सिफ़ात)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की मुबारक ह़यात के कई गोशे ऐसे हैं जिन में ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی की सीरत की झलक नज़र आती है बल्कि ता'लीमो तरबियत, दीनी ख़िदमात ह़त्ता कि विसाल के महीने में भी यक्सानियत है। इस की तफ़्सील कुछ यूं है : ﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी और इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا दोनों का नाम **अह़मद** है ﴾2﴿ दोनों बुज़ुर्गों ने अपने अपने वालिद से

www.dawateislami.net

इल्मे दीन हासिल किया ﴾3﴿ दोनों ह़ज़रात की तमाम उ़म्र इस्लाम के ख़िलाफ़ उठने वाले फ़ितनों की सरकोबी में बसर हुई ﴾4﴿ दोनों साह़िबान ने कभी भी बात़िल के सामने सर नहीं झुकाया ﴾5﴿ दोनों औलियाए किराम का विसाल **स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र** में हुवा।

मक्तूबाते इमामे रब्बानी और आ'ला ह़ज़रत

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने एक मक्तूब में "**मक्तूबाते इमामे रब्बानी**" से एक फ़रमान नक़्ल कर के ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي के फ़रमान को **इर्शादे हिदायत** क़रार दिया है, चुनान्चे इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने एक अहले मह़ब्बत को गुमराह लोगों की सोह़बत के नुक़्सानात समझाते हुए लिखते हैं : आप जैसे सूफ़ी साफ़ी मनिश को ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का एक इर्शाद याद दिलाता हूं और ऐन हिदायत के इम्तिसाल (हुक्म बजा लाने) की उम्मीद रखता हूं। फिर ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मक्तूब का कलाम ज़िक्र फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया : "मौलाना इन्साफ़! आप या ज़ैद या और अराकीन मस्लह़ते दीन व मज़ह़ब ज़ियादा जानते हैं या ह़ज़रत शैख़े मुजद्दिद ? मुझे हरगिज़ आप की ख़ूबियों से उम्मीद नहीं कि इस **इर्शादे हिदायत बुन्याद** को مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ लग़्व व बात़िल जानिये, और जब वोह ह़क़ है और बेशक ह़क़ है तो क्यूं न मानिये।"

(मक्तूबाते इमाम अह़मद रज़ा, स. 90 मुलख़्ख़सन)

आसारे विसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي 1033 सि.हि.

में सरहिन्द शरीफ़ आ कर ख़ल्वत नशीन (या'नी सब से अलग थलग) हो गए। अपने ख़ालिक़ व मालिक عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात की लगन ने मख़्लूक़ से बे नियाज़ कर दिया। इस ख़ल्वते ख़ास (या'नी ख़ुसूसी तन्हाई) में सिर्फ़ चन्द अफ़राद को हुजरे (या'नी कमरे) में आने की इजाज़त थी जिन में साहिब ज़ादगान ख़्वाजा मुहम्मद सईद और ख़्वाजा मुहम्मद मा'सूम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا, ख़ुल्फ़ाए किराम में से हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद हाशिम किशमी, हज़रते ख़्वाजा बदरुद्दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا और दो एक ख़ादिम। हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद हाशिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه विसाल (या'नी इन्तिक़ाल) से क़ब्ल ही दक्कन तशरीफ़ ले गए थे। हज़रते ख़्वाजा बदरुद्दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه आख़िर वक़्त तक हाज़िर रहे। जब हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद हाशिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه रुख़्सत होने लगे तो हज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى ने फ़रमाया : "दुआ करता हूं कि आख़िरत में हम एक जगह जम्अ़ हों।" (زُبْدَةُ الْمَقامات ص۲۸۲تا۲۸۵مُلَخَّصًا)

विसाल मुबारक

28 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1034 सि.हि./1624 सि.ई. को जाने अ़ज़ीज़ अपने ख़ालिक़े हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर दी। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ (حَضَراتُ الْقُدْس، دفتر دُوُم ص۲۰۸)

नमाज़े जनाज़ा व तदफ़ीन

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की **नमाज़े जनाज़ा** आप के शहज़ादे हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد ने पढ़ाई। इस के बा'द शहज़ादए

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़ह़ा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा । (ابن بشکوال)

मर्हूम ह़ज़रते ख़्वाजा मुह़म्मद सादिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق के पहलू में दफ़्न कर दिया गया । येह वोही मक़ाम था जहां ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى ने अपनी ज़िन्दगी में एक नूर देखा था और वसिय्यत फ़रमाई थी : "मेरी क़ब्र मेरे बेटे की क़ब्र के सामने बनाना कि मैं वहां जन्नत की क्यारियों में से एक क्यारी देख रहा हूं ।" इस कु़ब्बे (या'नी गुम्बद) में पहले शहज़ादए मर्हूम ह़ज़रते ख़्वाजा मुह़म्मद सादिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق 1025 सि.हि. की तदफ़ीन हुई और इस के बा'द **ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को उन के पहलू में दफ़्न किया गया । अब इस रौज़े शरीफ़ को दोबारा ता'मीर किया गया है । (زُبْدَةُ الْمَقامات ص٢٩٤۔٢٩٦،٣٠٥ مُلَخَّصًا)

औलाद के मुबारक नाम

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सात शहज़ादे और तीन शहज़ादियां थीं जिन की तफ़्सील येह है : **शहज़ादगान :** ﴾1﴿ ह़ज़रते ख़्वाजा मुह़म्मद सादिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق ﴾2﴿ ह़ज़रते ख़्वाजा मुह़म्मद सईद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ﴾3﴿ ह़ज़रते ख़्वाजा मुह़म्मद मा'सूम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ﴾4﴿ ह़ज़रते ख़्वाजा मुह़म्मद फ़र्रुख़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ﴾5﴿ ह़ज़रते ख़्वाजा मुह़म्मद ईसा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ﴾6﴿ ह़ज़रते ख़्वाजा मुह़म्मद अशरफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ﴾7﴿ ह़ज़रते ख़्वाजा मुह़म्मद यह़्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه । **शहज़ादियां :** ﴾1﴿ बीबी रुक़य्या बानो رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ﴾2﴿ बीबी ख़दीजा बानो رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ﴾3﴿ बीबी उम्मे कुल्सूम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا । (زُبْدَةُ الْمَقامات)

www.dawateislami.net

खु़-लफ़ाए किराम

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی के चन्द खु़-लफ़ाए किराम के नाम येह हैं : (1) साहि़ब ज़ादा ख़्वाजा मुह़म्मद सादिक़ (2) साहि़ब ज़ादा ख़्वाजा मुह़म्मद सईद (3) साहि़ब ज़ादा ख़्वाजा मुह़म्मद मा'सूम (4) ह़ज़रत मीर मुह़म्मद नो'मान बुरहान पूरी (5) शैख़ मुह़म्मद ताहि़र लाहोरी (6) शैख़ करीमुद्दीन बाबा ह़सन अब्दाली (7) ख़्वाजा सय्यिद आदम बन्नोरी (8) शैख़ नूर मुह़म्मद पटनी (9) शैख़ बदीउ़द्दीन (10) शैख़ ताहि़र बदख़्शी (11) शैख़ यार मुह़म्मद क़दीम ता-लक़ानी (12) ह़ज़रत अ़ब्दुल हादी बदायूनी (13) ख़्वाजा मुह़म्मद हाशिम किशमी (14) शैख़ बदरुद्दीन सरहिन्दी رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی । (حَضَرَاتُ الْقُدْس)

मुजद्दिदे अल्फ़े सानी और खु़-लफ़ाए आ'ला ह़ज़रत

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के एक ख़लीफ़ा इमामुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद दीदार अ़ली शाह अल्वरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه भी नक़्शबन्दी मुजद्दिदी हैं । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के खु़-लफ़ा को भी ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی से बे पनाह अ़क़ीदतो मह़ब्बत थी, सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना ह़ज़रत क़िब्ला ज़ियाउद्दीन अह़मद म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی ने एक मर्तबा सर पर दोनों हाथ रख कर इर्शाद फ़रमाया : "ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तो हमारे सर के ताज हैं ।" (सय्यिदी ज़ियाउद्दीन अह़मद अल क़ादिरी, जि. 1, स. 509 मुलख़्ख़सन) ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सय्यिदुना अबुल ब-रकात सय्यिद अह़मद क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی के "40 इर्शादात" जम्अ़ फ़रमाए हैं ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (तरमज़ी)

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हमें अपने वलिय्ये बरह़क़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی के सदक़े बे ह़िसाब मग़्फ़िरत से मुशर्रफ़ फ़रमा कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

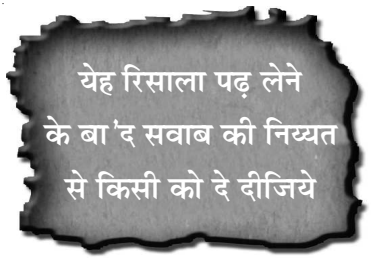

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में
आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1438 सि.हि.
नवम्बर 2016 ई.

مآخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن کریم		زبدۃ المقامات	مکتبۃ الحقیقۃ استنبول 1307ھ
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	حضرات القدس	محکمۂ اوقاف پنجاب مرکز الاولیا لاہور 1971ء
مسلم	دار ابن حزم بیروت	جامع کرامات الاولیاء	مرکز اہلسنّت برکات رضا الہند
معجم کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	مکتوبات امام احمد رضا	مکتبہ نبویہ مرکز الاولیا لاہور
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	سیرت مجدد الف ثانی	امام ربانی فاؤنڈیشن باب المدینہ کراچی
الفردوس بمأثور الخطاب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	سیدی ضیاء الدین احمد القادری	حزب القادریہ مرکز الاولیا لاہور
جمع الجوامع	دار الکتب العلمیۃ بیروت	عالمگیری	دار الفکر بیروت
التیسیر	مکتبۃ الامام الشافعی ریاض	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیا لاہور
مرآۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیا لاہور	وقار الفتاوی	بزم وقار الدین باب المدینہ کراچی
اتحاف السادۃ المتقین	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوی بحر العلوم	شبیر برادرز مرکز الاولیا لاہور
مکتوباتِ امام ربانی	کوئٹہ	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مبدا و معاد	مکتبۃ الحقیقۃ استنبول	حدائقِ بخشش شریف	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	स.	उ़न्वान	स.
100 ह़ाजतें पूरी होंगी	1	सवाब का तोह़फ़ा (ह़िकायत)	16
विलादते बा सआ़दत	1	ह़िकायत से ह़ासिल होने वाले म-दनी फूल	17
क़ल्ए़ की ता'मीर और पांचवें जद्दे अमजद की ब-र-कत (ह़िकायत)	2	हज़ार दाने वाली तस्बीह़	18
		बीबी आ़इशा के ईसाले सवाब की ह़िकायत	18
वालिदे माजिद का मक़ाम	3	तमाम औ़रतों में सब से प्यारी बीबी आ़इशा	19
ता'लीमो तरबियत	4	वली वली को पहचानता है (ह़िकायत)	20
जाहिल सूफ़ी शैत़ान का मस्ख़रा	5	सरहिन्द शरीफ़ के नव हुरूफ़ की निस्बत से 9 करामात	21
बेटा हो तो ऐसा !	6	﴾1﴿ एक वक़्त में दस घरों में तशरीफ़ आ-वरी (ह़िकायत)	21
बाप देखे औलाद सवाब कमाए	7		
मुजद्दिदे अल्फ़े सानी का हुल्या मुबारक	7	﴾2﴿ फ़ौरन बारिश बन्द हो गई (ह़िकायत)	21
सुन्नते निकाह़	8	﴾3﴿ इसे हाथी के पाउं तले कुचल्वा दिया जाए (ह़िकायत)	21
मुजद्दिदे अल्फ़े सानी ह़-नफ़ी हैं	8	﴾4﴿ बच्चे के बारे में ग़ैबी ख़बर दी (ह़िकायत)	22
शाने इमामे आ'ज़म ब ज़बाने मुजद्दिदे अल्फ़े सानी	9	﴾5﴿ दिल की बात जान ली ! (ह़िकायत)	23
इजाज़त व ख़िलाफ़त	9	﴾6﴿ मांग क्या मांगता है ? (ह़िकायत)	23
पीरो मुर्शिद का अ-दबो एह़तिराम (ह़िकायत)	10	﴾7﴿ मुरीद की मदद फ़रमाई (ह़िकायत)	24
मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी	11	﴾8﴿ बद अ़क़ीदगी का ख़्वाब में इलाज फ़रमा दिया (ह़िकायत)	24
नेकी की दा'वत का आग़ाज़	11		
इमाम ग़ज़ाली के गुस्ताख़ को डांटा (ह़िकायत)	12	﴾9﴿ अपनी वफ़ात की पहले ही ख़बर दे दी (ह़िकायत)	26
गुस्ताख़ का इ़ब्रतनाक अन्जाम (ह़िकायत)	13		
शौक़े तिलावत	14	मिट्टी का कोना टूटा हुवा पियाला (ह़िकायत)	26
सुन्नत पर अ़मल का इन्आ़म (ह़िकायत)	14	सादा काग़ज़ का भी अदब	27
सोने, जागने के 5 म-दनी फूल	15	राह चलते हुए काग़ज़ात को लात मत मारिये	28
मग़्फ़िरत की बिशारत	16	हुरूफ़ की ता'ज़ीम की जाए	28

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

उ़न्वान	स.	उ़न्वान	स.
जवानी कैसे गुज़ारें ?	29	कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा	38
जवानी ने'मते ख़ुदावन्दी	29	मनाक़िबे ग़ौसे समदानी ब ज़बाने मुजद्दिदे अल्फ़े सानी	39
ह़ाफ़िज़े क़ुरआन का अदब	30	मुजद्दिदे अल्फ़े सानी और आ'ला ह़ज़रत (पांच मिलती जुलती सिफ़ात)	39
मुजद्दिदे अल्फ़े सानी के 40 मा'मूलात	31		
ह़ज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी का इ़मामा शरीफ़	33	मक्तूबाते इमामे रब्बानी और आ'ला ह़ज़रत	40
बा इ़मामा नमाज़ दस हज़ार नेकियों के बराबर	33	आसारे विसाल	40
क्या इ़मामा सिर्फ़ उ़-लमा ही बांधें ?	34	विसाल मुबारक	41
आ़लिम और जाहिल सब इ़मामा बांधें	34	नमाज़े जनाज़ा व तदफ़ीन	41
इत्तिबाए़ सुन्नत इ़श्क़े रसूल की अ़लामत	35	औलाद के मुबारक नाम	42
तसानीफ़	36	ख़ु-लफ़ाए किराम	43
मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی के 11 अक़्वाल	36	मुजद्दिदे अल्फ़े सानी और ख़ु-लफ़ाए आ'ला ह़ज़रत	43
गाना बजाना ज़ह़रे क़ातिल है	38		

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घरों में ह़स्बे तौफ़ीक़ रिसाले या म-दनी फूलों के पेम्फ़लेट हर माह पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

काम्याबी का नुस्ख़ा !!

इर्शादे इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **:**

फ़लाहे ज़ाहिर येह (है) कि दिल व बदन दोनों पर जितने अह़कामे इलाहिय्यह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम) हैं (वोह) सब बजा लाए, न किसी कबीरा (या'नी बड़े गुनाह) का इरितकाब करे न किसी सग़ीरा (या'नी छोटे गुनाह) पर मुसिर (या'नी अड़ा) रहे। नफ़्स के ख़साइले ज़मीमा (या'नी बुरी ख़स्लतें म-सलन बुख़्ल और ह़सद वग़ैरा) अगर दफ़्अ़ (या'नी दूर) न हों तो मुअ़त्तल रहें, उन पर कारबन्द (या'नी अ़मल पैरा) न हो म-सलन दिल में बुख़्ल है तो नफ़्स पर जब्र (या'नी ज़ोर) कर के हाथ कुशादा रखे, ह़सद है तो मह़सूद (या'नी जिस से ह़सद है उस) की बुराई न चाहे।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 503)

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net